*Enhanced Edition
NEP 2020 Guidelines

तापसी

हिंदी उत्तर पुस्तिका

7

YBPL

तापसी हिंदी उत्तर पुस्तक-7

अध्याय-1.: देशगीत

1. मौखिक : स्वयं करें, **2. लिखित :** 1. भारत माँ का मुकुट बर्फ के पहाड़ के रूप में दिखाई पड़ रहा है। 2. पवन और चाँदनी भारत माँ की सेवा स्नेहपूर्वक पंखा झलने के रूप में करते हैं। 3. सरिताएँ मोतियों की माला के रूप में सुशोभित हो रही हैं। 4. भारत माँ के अंग पर हरियाली फसल के रूप में वस्त्र की भाँति सुशोभित है। 5. भारत माता की विजय पर समुद्र शंख और बादल तूर्य बजा रहे हैं। 6. भारत की प्राकृतिक सुषमा में पहाड , सूर्य की किरणें, बादल, वायु, आकाश, नदी, फसल का योगदान है। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3) 1.** स, 2. अ, 3. स, 4. द, 5. द, 6. ब, **(4)** 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ **भाषा की बात : (क)** निर्जल, पाताल, पराजय, विनाश, **(ख) 1.सरिता :** नदी, तटिनी, तरंगिनी, **2.स्वर्ण :** सोना, कनक, कंचन, **3.बादल :** मेघ, जलद, वारिद, **4.अनिल :** वायु, पवन, समीर, **5.चंद्र :** शशांक, शशि, राकेश, **सोचने-समझने की बात : 1.** आजकल प्रकृति से बहुत छेड़-छाड़ की जा रही है। नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं। हिमालय पर भी प्रदूषण फैल रहा है। इनकी सुरक्षा के लिए हम निम्नलिखित उपाय करेंगे। (i) हम जनता को प्रकृति के लाभों से अवगत कराएँगे, (ii) हम प्रदूषण से होने वाली हानि से भी जनता को अवगत कराएँगे, (iii) हम सब प्रदूषण को रोकने के लिए जगह-जगह पेड़-पौधे लगाएँगे, (iv) पेड़-पौधों को कटने से रोकेंगे,(v) गंदे पानी को सीधो नदियों में न डालकर पहले उसका शुद्धीकरण करेंगे। 2. हिमालय की प्राकृतिक सुंदरता अनुपम है हिमालय पर बड़े जंगल हैं तथा कुछ जगह सिर्फ बर्फ ही बर्फ है हिमालय के जंगलों में अनेक प्रकार के पेड़-पौधे पाए जाते हैं जो हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं। पेड़-पौधे वार्तावरण में उपस्थित हानिकारक गैसों को अवशोषित करके पर्यावरण को प्रदूषित होने से रोकते हैं। पेड़-पौधे कार्बन डाइ-ऑक्साइड गैस को ग्रहण कर ऑक्सीजन गैस प्रदान करते हैं जिसका उपयोग हम साँस लेने में करते हैं। **कुछ करने की बात :** 1. हमारी दृष्टि में भारत माँ के सौंदर्य को कायम रखने के लिए मानव की सोच निर्माणकारी होनी चाहिए। 2. स्वयं कीजिए। 3. स्वयं कीजिए।

अध्याय-2 : स्वर्ण-मरीचिका

1.मौखिक : स्वयं करें।, **2. लिखित : 1.** महात्मा जी भगत के इस व्यवहार से खुश हो गए कि वह आते ही हाथ जोड़कर एक पाँव पर खड़ा हो गया तथा एक पखवाड़े तक बुत की तरह खड़ा रहा। न कुछ माँगा, न कुछ बोला। प्रसन्न होकर महात्मा भगत

से बोले, ''बच्चा तेरी भक्ति से मैं बहुत प्रसन्न हुआ। बोल, तेरी क्या कामना है, मोक्ष पाना चाहता है या जीते जी स्वर्ग जाना चाहता है''। 2. भगत बेशुमार सोने की कामना में संत के सामने एक पैर पर पखवाड़े तक खड़ा रहा। 3. पारस देते हुए महात्मा ने कहा ''वचनों से बँधा हूँ, तेरी कामना पूरी करनी ही पड़ेगी। तूने एक पखवाड़े तक तपस्या की, सो तुझे एक पखवाड़े का समय देता हूँ। यह पारस है। इसके स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है। पर एक बार से अधिक तू इसे काम में नहीं ले सकेगा। जितना लोहा इकट्ठा कर ले। अब तो ठीक?' पारस देते हुए उन्होंने ताकीद की-''पखवाड़ा बीतते ही मैं पारस लेने के लिए आ जाऊँगा। एक पल भी ओर नहीं मिलेगा।'' **4.** भगत को अपने घर में लोहे की निम्नलिखित चीजें दिखाई दीं-तवा, चिमटा, संडासी, छलनी, छुरी, कड़ाही, कैंची, साँकल, कुंडी और ताला-चाबी। **5.** बूढ़ी माँ ने बेटे भगत को यह बात समझानी चाही कि ज्यादा लालच के चक्कर में समय निकल जाएगा तथा कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। अत: जो कुछ भी घर में है तू उसी में संतुष्ट हो जा।

बहुविकल्पीय प्रश्न (3) 1. ब, **2.** ब, **3.** ब, **4.** अ, **5.** ब, **6.** अ, **(4)** 1. भगत, **2.** महात्मा, **3.** संत, 4. बनिये, **5.** भगत का बूढ़ा बाप, **6.** फाल, **7.** चंद्रहार, **(5)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓, **(6).** भगत ने, संत से, **2.** माँ ने, बेटे (भगत) से, **3.** संत ने, भगत से, **4.** संत ने, भगत से, **5.** माँ ने, बेटे (भगत) से, **6.** संत ने, भगत से,

भाषा की बात : (क) अपनापन (अपनत्व), गरमी, खुशी, एकता (एकत्व), **(ख)** संत : साधु, महात्मा, मुनि, आँख : नेत्र, नयन, लोचन, मुँह : मुख, आनन, वदन, सोना : कनक, स्वर्ण, कंचन, दिन : दिवस, वार, वासर,

सोचने-समझने की बात : 1. महात्मा और भगत की सोच में निम्नलिखित अंतर था-भगत को केवल पैसे से प्यार था वह केवल पैसा पाने के लिए भक्ति करता है। परंतु महात्मा को प्रभु में आस्था थी तथा उनके लिए प्रभु की भक्ति ही सब कुछ थी, उनके लिए पैसों का कोई मोल नहीं था। 2. अधिक से अधिक सोना पाने के लालच की मनोवृत्ति के कारण भगत अंतिम समय तक सोना बनाने के लिए पारस का प्रयोग नहीं कर सका।

कुछ करने की बात : 1. पारस पाने के लिए एक पखवाडे की तपस्या तो काफी थी परंतु एक पखवाड़े में वह पारस का उपयोग भी न कर सका। 2. यदि भगत घर की त्नीजों को ही सोने की बना लेता, तब भी वह संतुष्ट नहीं होता तथा मन में यही सोचता रहता काश में और लोहे को सोना बना पाता।

अध्याय-3 : प्राकृतिक आपदाएँ

1. मौखिक : स्वयं करें। **2.लिखित :** 1. मानव को प्रकृति के प्रकोप का सामना करना पड़ता है। 2. पृथ्वी के दिनों-दिन बढ़ते हुए तापमान को 'ग्लोबल वार्मिंग'कहा जाता है। 3. ओजोन परत प्रकृति की एक सुरक्षा परत है। यह सूर्य की परा-बैंगनी किरणों को धरती पर सीधे गिरने से रोकती है। जिसके कारण हमारी पृथ्वी राख का ढेर बनने से बची रहती है। 4. मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड आदि गैसें ग्रीन हाउस गैस हैं। ये गैसें ताप को सोखकर उसका घनत्व बढ़ा देती हें। ये ग्रीन हाउस गैसें पृथ्वी की ओजोन परत को क्षति पहुँचाती हैं। 5. ग्लेशियरों के पिघलने से समुद्र का जल-स्तर बढ़ जाएगा और अनेक देश जो समुद्र के किनारे बसे हैं या टापू के रूप में हैं, जल-समाधि ले लेंगे। वर्ष 2050 तक 20 करोड़ लोग जो समुद्र के किनारे बसे हैं, उन्हें विस्थापित होना पड़ेगा। समुद्र का जल-स्तर बढ़ने का सबसे अधिक असर एशिया और अफ्रीका महाद्वीप पर पडेगा। बंगाल की खाड़ी में समुद्र का स्तर 3.4 मिमी की वार्षिक रफ्तार से बढ़ रहा है जबकि संसार में इसका औसत 2.2 मिमी है। एक रिपोर्ट के अनुसार, सन् 2100 तक पृथ्वी का तापमान 101°C सेल्सियस से 6.6°C सेल्सियस तक बढ़ जाएगा जबकि समुद्र का जल-स्तर ,8 सेमी. से 59 सेमी. तक ऊँचा उठ जाएगा। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3) 1.** अ, 2. आ, 3. ब, 4. स, 5. स, (4) 1. पराबैंगनी, 2. ग्लेशियरों, 3. तिनके, 4. केदारनाथ, 5. ग्रीष्मावकाश, 6. कार्बन, (5) 1. ✓, 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✓। **भाषा की बात :** (क) सृजन (निर्माण) , असुरक्षित, हास, अविकसित, अव्यवस्था, अप्राकृतिक, प्राचीन, असंतुलित, (ख) **सूर्य :** सूरज, भानु, दिनकर, **धरा :** भूमि, धरती, पृथ्वी, **गृह :** घर, आलय, भवन, **अग्नि :** आग, अनल, पावक, **आयु :** उम्र, अवस्था, दशा। **सोचने समझने की बात:** स्वयं करें। **कुछ करने की बात :** स्वयं करें।

अध्याय-4 : शरणागत

1.मौखिक : स्वयं करें। **2.लिखित :** 1. माहमशाह को किसी ने भी शरण इसलिए नहीं दी क्योंकि माहमशाह दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी का भगोड़ा था और उसे शरण देकर कोई अलाउद्दीन खिलजी को नाराज नहीं करना चाहता था। 2. माहमशाह राणा हमीर की शरण में अपने प्राणों की रक्षा के लिए आया था। 3. अलाउद्दीन के संदेश का हमीर ने यह प्रत्युत्तर दिया। उसने लिखा ''माहम को शरण दी है, कोई नौकर नहीं रखा और अपना सर्वस्व लुटाकर भी शरणागतों की रक्षा करना मेरी जाति के संस्कार हैं। सपने में भी उम्मीद न रखिए कि माहम को मैं आपके दरवाजे लाऊँगा। अब जो मुनासिब समझें, सो कीजिए।'' 4. रणथंभौर के किले में हुई सभा में यह निर्णय लिया गया कि कल किले का द्वार खोल दिया जाए और जमकर युद्ध

हो–इस युद्ध का स्पष्ट अर्थ था–आत्माहुति, सर्वस्व–समर्पण। 5. स्वयं करें। 6. राजपूत स्त्रियों ने जौहर करने का निश्चय किया क्योंकि वे जानती थीं कि उनके पति वीरगति को प्राप्त होंगे। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. अ, 2. स, 3. ब, 4. स, 5. स, 6. द, **(4)** 1. दुखिया, प्राण, 2. बादशाह, 3. दिल्ली, रणथंभौर, 4. सलाहकारों, अनुत्साहित, 5. पहाड़ी, रणथंभौर, 6. फैसला, किले, 7. खून, बूँद, **(5)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ । **भाषा की बात : (ख)** विरोधी, अनिश्चय, शांति, मुख्य, अनुत्साहित। **(ग) बादशाह :** राजा, नृप, नरेश, **युद्ध :** रण, संग्राम, समर, **मित्र :** दोस्त, सखा, सहचर, **नौकर :** अनुचर, सेवक, परिचारक, **पति :** स्वामी, नाथ, वल्लभ, **सोचने–समझने की बात :** 1. बिना युद्ध किए राणा हमीर माहमशाह को बादशाह अलाउद्दीन खिलजी से आपसी बातचीत व सुलह करके बचा सकता था। 2. यदि सभी राजपूत राजा माहमशाह की रक्षा के लिए दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध युद्ध करते तो कहानी का यह अंत होता कि अलाउद्दीन खिलजी की हार होती तथा राजपूत राजा जीत जाते और इस युद्ध में लाखों लोगों की जानें जातीं। **कुछ करने की बात :** एक शरणागत के लिए हजारों लोगों की जान लेना या देना सर्वथा उचित नहीं है क्योंकि वे सभी लोग तो बेकसूर होते हैं।

अध्याय– 5 : सुश्रुत

1. मौखिक : स्वयं करें। **2. लिखित :** 1. सुश्रुत का यश शल्य चिकित्सा में था। किंतु उन्होंने क्षय रोग, कुष्ठ रोग, मधुमेह, हृदय रोग, एनजाइना एवं विटामिन सी की कमी से होने वाले रोग–स्कर्वी के बारे में भी महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। 2. उन दिनों टाँके लगाने के लिए एक किस्म के चींटों का उपयोग किया जाता था। फटी हुई आँत के दो किनारों को साथ मिलकर उस पर चींटे छोड़ दिए जाते। वे चींटे अपने दाँतों से उस पर चिपक जाते, जिससे फटी हुई आँत के दो किनारे आपस में सिल–से जाते। अब चींटों का शेष भाग काटकर अलग कर दिया जाता और उदर के बाहरी ऊतकों और त्वचा पर टाँके कस दिए जाते। कुछ ही दिनों में आँत का घाव भर जाता। साथ ही चींटों का सिर भी ऊतकों में अपने आप घुल–मिल जाता था। 3. सुश्रुत संहिता में यंत्रों को हिंस्र पशु तथा पक्षियों के मुँह के आकार के अनुसार नाम दिए गए हैं, जेसे–सिंहमुख (सिंह के मुँह जैसा), गृप्रमुख (गिद्ध के मुँह जैसा), मक्रमुख (मगरमच्छ के मुँह जैसा) आदि। ये यंत्र आधुनिक शल्य यंत्रें से किसी भी तरह कम न थे। इनके साथ ही 20 और शल्य यंत्र भी वर्णित हैं। इनके नाम हैं–मंडलाग्र, करपत्र, मुद्रिका, बृहिमुख आदि। 4. मानव शरीर के भीतरी अंगों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सुश्रुत ने एक अनूठी विधि खोज निकाली थी। मृत शरीर को पहले किसी वजनदार वस्तु के साथ बाँधकर किसी छोटी–सी नहर में डाल दिया जाता था। एक सप्ताह बाद जब बाहरी त्वचा और ऊतक

फूल जाते, तब झाड़ियों और लताओं से बने बड़े-बड़े ब्रशों द्वारा उन्हें शरीर से अलग कर दिया जाता था। इससे शरीर के आंतरिक अंगों की रचना स्पष्ट हो जाती थी। 5. शल्य कला का प्रारंभिक प्रशिक्षण देने के लिए वे अपने शिष्यों को कंद-मूल, फल-फूल, पेड-पौधों की लताओं, पानी से भरी मशकों, चिकनी मिट्टी के ढाँचों और मलमल से बने मानव-पुतलों पर दिनोंदिन अभ्यास करवाते। चीरा कैसे लगना है, उसे कितना लंबा, कितना गहरा रखना है-इसका अभ्यास प्राप्त करने के लिए शिष्यों को ककड़ी, करेला, तरबूज जैसे फलों और सब्जियों पर कई-कई दिनों तक अभ्यास करना पड़ता था। किसी घाव की गहराई कैसे पहचानें और उसे भरने के लिए क्या तकनीक अपनाएँ-इसका प्रशिक्षण दीमक खाई लकड़ी के द्वारा दिया जाता, जिससे कि शिक्षार्थी रूणण शरीर की स्थिति का सही अंदाजा लगा सकें। अभ्यास के दौरान कमल के फूल की डंडी, शिरा (रक्तवाहिनी) बन जाती, जिसे शिष्य को सूई द्वारा बेधाना पड़ता था। इसी तरह टाँका लगाने का प्रशिक्षण तरह-तरह के कपड़ों और चमड़े पर दिया जाता। खुरदरे चमड़े पर, जिस पर से बाल न हटाए गए हों, खुरचने की कला सिखाई जाती थी। पटी बाँधने का ज्ञान देने के लिए मानव पुतलों का सहारा लिया जाता था। इस प्रशिक्षण में उत्तीर्ण होने के बाद ही शिष्य के प्रशिक्षण का दूसरा चरण शुरू होता। अब उसे किसी कुशल शल्य-चिकित्सक की देख-रेख में रख दिया जाता था। वह तरह-तरह की शल्य क्रियाएँ देखता और उनसे सीखता जाता। फिर कुछ समय बाद जब वह पूरी तरह परिपक्व हो जाता, तब उसे गुरु की देख-रेख में स्वयं अक्रपरेशन करने की अनुमति दी जाती थी। इस तरह पूर्ण प्रशिक्षण और अनुभव पाकर ही वह पाठशाला से बाहर निकलता था। 6. सुश्रुत जितने बड़े शल्य-चिकित्सक थे, उतने ही श्रेष्ठ गुरु भी थे। वे अपने शिष्यों को शल्य-चिकित्सा की छोटी-से-छोटी शिक्षा भी अपनी निगरानी में देते थे और शिष्यों को कुशल चिकित्सक बनाने में पूरा सहयोग देते थे। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. ब, 2. ब, 3. ब, 4. ब, **(4)** 1. सुश्रुत, 2. शल्य चिकित्सक, 3. चीरा, 4. पट्टियों, 5. चींटे, 6. पटी बाँधने, **(5)** इन पक्तियों का भाव यह है कि सुश्रुत की शल्य चिकित्सा विद्यालय एक पवित्र मंदिर के समान था जिसके दरवाजे केवल उनके लिए खुले थे जिनके मन में मानव के प्रति प्रेम तथा मानव सेवा का भाव भरा हो तथा जिनमें कठोर परिश्रम करने की चाह हो तथा जो मानव सेवा को ही अपनी साधाना समझते थे। (घ) 1. सुश्रुत का बचपन गंगा की पावन लहरों में खेलते हुए बीता। 2. उन्होंने काशी के राजा, महान चिकित्साशास्त्री दिवोदास की देख-रेख में चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। 3. दिवोदास काशी के राजा, महान चिकित्साशास्त्री थे, 4. सुश्रुत ने अपने जीवन काल में बहुत सी नई शल्य तकनीकों का विकास किया 5. स्वयं करें। **भाषा की बात :(क)** 1. बच्चे पाठशाला में पढ़ने जाते हैं। 2. कृष्ण जी भगवान विष्णु के अवतार थे। 3. सुश्रुत संहिता एक महान ग्रंथ है। 4. रणथंभौर की स्त्रियाँ अपने सर्वश्रेष्ठ श्रृंगार में थीं। 5. अभ्यास के समय फूल की डंडी, रक्तवाहिनी बन जाती थी। (ख) अ, उप, वि, वि, प्र,

स, **सोचने-समझने की बात :** 1. टाँके लगाने की आवश्यकता तब पड़ती है जब शरीर का कोई अंग गहरा कट या फट जाता है तब रक्तस्राव रोकने के लिए तथा घाव को जल्दी ठीक करने के लिए टाँके लगाने पड़ते हैं। 2. यदि टाँके पक जाएँ तो टाँके वाले स्थान पर मवाद पड़ जाती हैं तथा टाँके खुल जाते हैं व घाव बन जाता है। इसका उपचार सारे टाँके काटकर तथा जख्म की स्फाई करके पुन: टाँके लगाकर किया जाता है। **कुछ करने की बात :** स्वयं करें।

अध्याय-6 : बीज

1. मौखिक : स्वयं करें। **2.लिखित : 1.** बीज अपनी स्वतंत्रता तथा जीवन पाना चाहता है। 2. बीज का प्रारंभिक जीवन अंधकारमय होता है। 3. बीज अपने हृदय में तना, जड़, पत्ते, डाली तथा हरियाली छिपाए रहता है। 4. जब बीज मिट्टी से स्वतंत्र हो जाता है तथा उसके हृदय में छिपे तना, पत्ता, डाली, बाहर निकल आते हैं तब धीरे-धीरे वह बढ़कर वृक्ष बनता है। 5. कविता में बीज की यह विशेषता बताई गई है कि बीज तुच्छ होता है फिर भी उसमें जीवन रूपी अंकुर होता है तथा उसके अंदर हरियाली तथा फल, फूल समाहित होते हैं। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. स, 2. द, 3. ब, 4. ब, 5. ब, **(4)** 1. यह पक्तियाँ कविता बीज से ली गई। 2. बीज मिट्टी के अंधकार में है। 3. बीज में तना, पत्ता, डाली छुपा होता है। 4. बीज का प्रारंभिक जीवन अंधकारमय होता है। 5. 1. अंधकार, संसार, बंद, अंकुर, सरसों, मिट्टी । **भाषा की बात : संसार :** विश्व, दुनिया, जग, **फल :** कंद, फलम, बीजकोष **फूल :** पुष्प, सुमन, कुसुम, **सागर :** जलधि, समुद्र, पयोधि, **पुत्र :** बेटा, आत्मज, वत्स **(ख)** उथला, प्रकाश, चेतन, पराया, चेतन, **(ग)** गहरा सागर, क्षुद्र चीज, अमर पुत्र, अपार सागर, जड़ निद्रा, **(घ)** 1. मिट्टी, 2. क्षुद्र 3. हरीतिमा, 4. निखिल, 5. मुक्ति, **सोचने-समझने की बात :** कुछ पेड-पौधो ऐसे भी होते हैं जिनके बीज नहीं होते। ऐसे पौधों में प्रजनन की क्रिया उन पेड़ों की कलम बनाकर की जाती है। इस प्रकार से प्रजनन को वेजेटेटिव रीप्रोडक्सन कहते हैं। इस तरह के कुछ पेड-पौधों के नाम इस प्रकार हैं गन्ना, केला, गुलाब आदि। **कुछ करने की बात :** स्वयं करें।

अध्याय-7 : छोटा जादूगर

1. मौखिक : स्वयं करें। **2. लिखित 1** . बालक ऐसी दशा में खेल दिखा रहा था-बालक की वाणी में वह प्रसन्नता नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे वह स्वयं काँप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे। 2. बालक ने अपने माता-पिता के बारे में बताया कि बापू जी जेल में हैं तथा माँ बीमार है। 3. लेखक की पत्नी ने छोटे जादूगर से कहा ''दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आए। भला कुछ मन तो बहले। '' 4. जादूगर को अपने आप पर इसलिए विश्वास था क्योंकि वह

ताश का खेल दिखाना अच्छी तरह से जानता था। 5. छोटा जादूगर पैसा इसलिए चाह रहा था क्योंकि उसकी माँ बीमार थी तथा वह उसके लिए पथ्य ले जाना चाहता था। 6. छोटा जादूगर अपने तमाशे में भालू को मनाते हुए, बिल्ली को रूठते हुए, बंदर का घुड़की देना, गुड्डे, गुड़िया का ब्याह दिखाता था। ताश के पत्ते, गले की सूत की डोरी का टुकडे-टुकडे होकर जुड़ जाना, लट्टुओं का अपने आप नाचना आदि भी दिखाता था। 7. लेखक ने छोटे जादूगर के झोंपडे में जाकर देखा कि छोटे जादूगर की माँ चीथडों से लदी हुई काँप रही थी। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** . स, 2. ब, 3. अ, 4. स, 5. ब, 6. द, **(4)** . निकम्मा, 2. शरबत, 3. तेरह-चौदह, 4. बारह, 5. जादूगर, 6. कार्यालय, **(5)** . लेखक ने, छोटे जादूगर से, 2. छोटे जादूगर ने, लेखक से, 3. छोटे जादूगर ने, लेखक से, 4. लेखक ने, छोटे जादूगर से, 5. लेखक ने, छोटे जादूगर से, 6. लेखक ने, छोटे जादूगर से। **भाषा की बात : (क)** . फेंकते हैं। 2. जा सका। 3. नाच रहे थे। 4. जलपान कर रहे हैं। 5. करोगे, 6. कहा है, चले आना। **सोचने-समझने की बात :** आजकल 'बाल श्रमिक ' का विरोध किया जा रहा है। परंतु, मुझे इस छोटे बालक का खेल दिखाना उचित प्रतीत होता है। क्योंकि यदि वह खेल दिखाकर पैसे न कमाता तो उसका व उसकी माँ का पेट कौन भरता। **कुछ करने की बात :** 1. स्वयं करें। 2. यदि छोटे जादूगर को दस रुपए मिल गए होते तो वह उनसे पेट भर पकौड़ी खाता तथा अपनी माँ के लिए पथ्य भी ले जाता।

अध्याय-8 : एक पैसा : एक मिनट

1.मौखिक : स्वयं करें। **2.लिखित :** 1. जीवन में सफल वह होता है जो एक-एक पैसे का तथा एक-एक मिनट का सदुपयोग करता है। 2. खर्च और आदत में हमारा जीवन नियमित हो सकता है यदि हम एक पुरानी कहावत पर अमल करें, जैसे कहावत यह है कि 'पहले लिखे पीछे दे, भूल-चूक कागज से ले' यानि हम जो भी खर्च करें, एक कापी में दर्ज करते जाएँ। उससे जीवन नियमित होता है, खर्च नियमित होता है, आदत नियमित होती है। कंजूस होना और अपनी जरूरतों पर धयान न देना अच्छी बात नहीं है। पर फालतू खर्च करना भी कोई अच्छी बात नहीं है। 3. समय को पकड़ पाना आसान इसलिए नहीं है क्योंकि समय किसी का आसरा नहीं देखता, कभी थकता नहीं, इसका कोई स्टेशन नहीं, इसको कोयला, पानी, खाद, खुराक की जरूरत नहीं। अर्थात् यह लगातार भागता रहता है। हर मिनट के साथ दुनिया आगे बढ़ती है और हर मिनट पर इंसान की उम्र घटती है। अत: समय को पकड़ पाना आसान नहीं है वह किसी के लिए भी नहीं रुकता है निरंतर गतिशील है। 4. जीवन में एक पैसे का बहुत महत्त्व है। एक-एक पैसा रखने से हम लोग मालामाल हो जाते हैं। एक-एक पैसा फेंकने से लोग कंगाल हो जाते। एक-एक पैसे के इंतजाम पर लोगों को वाहवाही

मिलती है और एक-एक पैसे की बरबादी पर लोगों की तबाही होती है। 100 नए पैसे से रूपया बनता है। रुपया मुश्किल से आता है, आसानी से भागता है। हर पैसे के साथ रूपया भाग जाता है। यदि तुम्हें एक रुपए की जरूरत है। 99 नए पैसे तुम्हारे पास हैं। जब तक एक पैसा उसमें नहीं मिलाया जाए, रुपया नहीं बन सकता। समझो कि एक नया पैसा कितनी कीमत रखता है। 5. भरी हुई जेब एक-एक पैसे पर धयान नहीं देने से तथा भली-भाँति सोच-समझकर नहीं खर्च करने से खाली हो जाती है। 6. जीवन में एक मिनट का बहुत महत्त्व है। मिनटों के समूह ने हमारे जीवन को बनाया है। इस प्रकार हर एक मिनट जीवन का अनमोल हिस्सा है। एक-एक मिनट का यह तकाजा है कि इंसान उसे काम में लाए, उसके साथ खिलवाड़ न करे, अन्याय नहीं करे। उसको भगवान की धारोहर और थाती समझकर, उसका सही-सही इस्तेमाल करे। मिनट भर के लिए गाड़ी छूट गई, तो स्टेशन पर पड़े-पड़े पछताना है। मिनट भर के लिए असावधाान हुए तो सड़क पर भारी दुर्घटना घट सकती है। एक मिनट सारे दिन को बिगाड़ सकता है और दिन बिगड़ता है तो हफ्ते और महीने को सँभालना कठिन हो जाता है। एक मिनट का मूल्य समझकर जो उसको सदुपयोग में लाता है, वह कुछ कर पाता है वरना हाथ मलता और पछताता रह जाता है। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. स, 2. ब, 3. अ, 4. स, 5. ब, 6. ब, **(4)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✗। **भाषा की बात : (क) कंगाल :** रंक, गरीब, दरिद्र, **कपड़ा :** वस्त्र, पट, चीर, **चिड़िया :** पक्षी, विहग, खग, **धरती :** भू, धरा, पृथ्वी, **आकाश :** अंबर, व्योम, गगन, **भगवान :** परमेश्वर, ईश्वर, प्रभु, **(ख)** भरता है। **2.** भाग जाता है। **3.** उड़ी जा रही है। **4.** दौड़ रही है। **5.** उड़ा जा रहा है। **सोचने-समझने की बात :** स्वयं करें। **कुछ करने की बात :** परीक्षा में समयाभाव के कारण हम प्रश्न-पत्र पूरा नहीं कर पाए। ऐसे में हमें समय के महत्त्व का अनुभव हुआ। हमने इससे सबक सीखा कि समय की एक-एक मिनट मूल्यवान है तथा उसका उपयोग सही-सही करना चाहिए अन्यथा समय निकल जाने पर पछताना पड़ता है। अत: समय की एक-एक मिनट अनमोल है उसे गँवाना नहीं चाहिए।

अध्याय-9 : अमरनाथ की यात्रा

1.मौखिक : स्वयं करें। **2. लिखित :** 1. पर्वत पर साँस लेने में कष्ट इसलिए होता है क्योंकि वहाँ ऑक्सीजन की कमी होती है। 2. पटनी टॉप पर पहुँचकर लेखक ने हवा के ठंडे झोंकों का अनुभव किया जो कश्मीर की जलवायु की बानगी दे रहे थे। 3. 'छड़ी मुबारक ' श्रीनगर के शंकराचार्य मंदिर में प्रस्थापित शिवलिंग का प्रतीक है। 4. स्वयं करें। 5. वेरीनाग से पहलगाम तक का ख़श्य हरियालीयुद्र था। पहलगाम के किनारे एक बहुत ही खूबसूरत नदी 'लिद्दर' थी। क्या पहाड़ी अल्हड़पन और क्या पानी

का सफेद बहाव। तेजी ऐसी कि साँप शरमाए, और गर्जना ऐसी कि समूचा पहलगाम उसके बिना सूना हो जाए। 6. लेखक की दरिया-ए-चिनाब के इलाके की यात्रा इस प्रकार थी यह इलाका बहुत से पहाड़ों से घिरा है। फुसफुसे पहाड़ के धाँसके दिख रहे थे। थोड़ी-सी बरसात पड़ी नहीं कि पहाड़ ऊपर से धासके और रास्ता जाम हो सकता था। लेखक अपने राम बस की खिड़की से चिनाब के भयंकर गंदे पानी का उफान मारता बहाव देखकर दंग थे। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. अ, 2. ब, 3. स, 4. अ, 5. ब, 6. ब, **(4)** 1. अमरनाथ-यात्रा, 2. बस, 3. आनंद, 4. पटनी टॉप, 5. जमीनी, 6. झेलम, **भाषा की बात : (क) हादसा :** मेरे साथ सड़क पर आज हादसा होते-होते बचा। **शरण :** रावण के द्वारा विभीषण को राज्य से निकाल दिए जाने पर विभीषण राम की शरण में चले गए। **आस्था :** मेरी ईश्वर में बहुत आस्था है। **पुलिस :** पुलिस चोर व डाकुओं को पकड़ती है। **पूर्णिमा :** पूर्णिमा का चाँद पूर्ण होता है। **(ख) अनु :** अनुसार, अनुचर, अनुमान, **वि :** वियोग, विशेष, विज्ञान, **कु :** कुपुत्र, कुमार्ग, कुपथ, **सु :** सुगम, सुशील, सुपुत्र, **प्र :** प्रयोग, प्रगति, प्रयत्न, **परि :** परिकल्पना, परियोजना, परिचालक, **सोचने-समझने की बात :** 1. अमरनाथ यात्र के दौरान लेखक ने जम्मू, पटनी टाप, दरिया-ए-चिनाब, वेरीनाग, दरिया-ए-झेलम, पहलगाम, नीलगंगा, चंदनवाड़ी, अमरनाथ आदि स्थलों की सैर की। 2. लेखक ने अपनी यात्रा में जिन-जिन साधानों का उपयोग किया उनमें से मैं यात्रा में सभी साधनों का उपयोग करूँगा। **कुछ करने की बात :** स्वयं करें।

अध्याय-10 : प्रकृति का सान्निध्य

1.मौखिक : स्वयं करें। **2. लिखित :** 1. शहर के लोग बालिश्त-भर जमीन में कृत्रिम बगीचा बनाकर, दो-चार पौधे उगाकर प्रकृति के साथ मेल साधते हैं। 2. पशु-पक्षी लेखक की आँखों में आदमियत नहीं वरन् आत्मीयता देखते हैं। 3. हम जैसे 'हेवानियत' शब्द तिरस्कार के साथ इस्तेमाल करते हैं, वैसे ही पशु-पक्षी 'आदमियत' शब्द का इस्तेमाल तब करते होंगे जब मनुष्य उनसे बुरा व्यवहार करते हैं। कुछ पाले हुए कुत्ते या पक्षियों को स्वजन-द्रोह करते देख, वे कहते होंगे कि क्या करें, पशु तो पशु ही हैं और पक्षी, पक्षी। लेकिन आदमियत का रंग लगने से वे बिगड़ गए हैं। 4. शहर के लोग घरों में बगीचा घर की शोभा बढ़ाने के लिए लगाते हैं। इसका वास्तविक उद्देश्य अपनी प्रतिष्ठा दर्शाना तथा शुद्ध वायु प्राप्त करना होता है। 5. कुछ लोग लेखक की आलोचना करते हैं। क्योंकि उन्हें उनके कुछ प्रश्नों का उत्तर नहीं मिला जैसे काका साहब जैसे गंभीर पुरुष, विचारक और नेता अफ्रीका के जंगलों में वहाँ के जानवर देखने के लिए क्यों घूमे होंगे? जान जोखिम में डालते हैं, यह तो है ही, लेकिन जिंदगी के कीमती दिन इस तरह बरबाद करते हैं! इतना ही नहीं, इस धुन का

व्यवस्थित उत्साहपूर्ण वर्णन करते हुए किताब भी लिखते हैं, यह कुछ समझ में नहीं आता!'' इस तरह एक-दो स्नेहियों ने कहा भी और लिखा भी हे। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. अ, 2. ब, 3. स, 4. ब, 5. अ, **(4) 1.** आशंकाएँ, 2. आलोचना, 3. सयानी, 4. मानवता, 5. बालक, 6. धान्यता, 7. जंगलों, **(5)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓। **भाषा की बात : (क) समकक्षी :** जंगलों पर साम्राज्य का उपभोग करने वाले बादल मेरे समकक्षी हैं। **व्योमविहार :** बहुत से पक्षी व्योम विहार करते हैं। **(ख)** अव्ययीभाव समास, दृढ़ समास, तत्पुरुष समास, अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, अव्ययीभाव समास, **सोचने-समझने की बात :** 1. पशु-पक्षी भी हमें एक क्षण के लिए दुश्मन के तौर पर देखने के बाद हमारी आँखों में आदमियत नहीं वरन आत्मीयता देखते हैं। मानवता के हमारे ऊँचे-ऊँचे आदर्श पशु-पक्षी नहीं जानते, क्योंकि मानव-जाति का उनका अनुभव बहुत कड़वा है। हम जैसे 'हेवानियत' शब्द तिरस्कार के साथ इस्तेमाल करते हैं, वैसे ही पशु-पक्षी 'आदमियत' शब्द इस्तेमाल करते होंगे और उसमें अपना सारा कड़वा अनुभव व्यक्त करते होंगे। कुछ पाले हुए कुत्ते या पक्षियों को स्वजन-द्रोह करते देख, वे कहते होंगे कि क्या करें, पशु तो पशु ही हैं और पक्षी, पक्षी। लेकिन आदमियत का रंग लगने से वे बिगड़ गए हैं। 2. मनुष्य पशु-पक्षियों में से ही एक प्राणी है, क्योंकि पशु-पक्षियों की तरह मनुष्य की भी मुख्य आवश्यकता भोजने व पानी है। पशु-पक्षी भी प्यार व स्नेह को मनुष्य की तरह समझते हैं। **कुछ करने की बात :** 'गौरैया' नामक एक चिड़िया जो पहले हमारे घर-आँगन में प्राय: दिखाई देती थी अब दिखाई नहीं देती है। क्योंकि पहले हमारे घरों के आस-पास पेड-पौधो होते थे जहाँ गौरैया, अपने घोंसले बनाकर रहती थी तथा घूमते हुए हमारे घर आँगन में आ जाती थी परंतु अब मनुष्य ने अपने फायदे के लिए पेड़-पौधों को काट दिया है। जिसके कारण गौरैया के घर नष्ट हो गए हैं तथा वह अब हमारे घर-आँगन में नहीं दिखाई देती। 2. स्वयं करें।

अध्याय-11 : रे मन, आज परीक्षा तेरी

1. मौखिक : स्वयं करें। **2. लिखित :** 1. यशोधरा, भगवान से यह विनती कर रही है कि मेरी बात न बिगड़े। 2. बुद्ध चलकर आए हैं। उनके लिए दो कदम चलना भारी इसलिए है क्योंकि वे अब संन्यासी थे और उनके लिए गृहस्थ जीवन में लौटना बहुत मुश्किल था। 3. चेरी दासी है। वह कहीं इसलिए नहीं जाना चाहती क्योंकि वह वहाँ रहकर अपना उद्धार करने वाले का इंतजार करना चाहती है। 4. लोग बुद्ध के दर्शन करना व उन्हें स्पर्श करना अपना मंगलकारी सौभाग्य मान रहे हैं। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)**1. स, 2. ब, 3. स, 4. द, **भाषा की बात : (क)** संतोष, विग्रह, कल, दुर्भाग्य, तिरस्कार। **(ख)** नि+ग्रह, अ+भाव, सु+आगत, अवलंब+इत, सौ+भाग्य, उत्+धारक, **सोचने-समझने की बात :** महात्मा बुद्ध के गृह-त्याग के पश्चात यशोधरा के मन

का विचलित होना उचित था क्योंकि जिस स्त्री का पति उसे छोड़कर चला गया हो उसका मन विचलित होना स्वाभाविक ही है। **कुछ करने की बात :** यदि महात्मा बुद्ध यशोधरा से कहकर गृह-त्याग करते तो यशोधरा उन्हें कभी भी गृह त्याग करने की अनुमति नहीं देती।

अधयाय-12 : सिकंदर और पुरु

1.मौखिक : स्वयं करें। **2. लिखित :** (क) 1. समर सेल्युकस द्वारा पुरु की हथकड़ियाँ खोले जाने पर प्रसन्न हो रहा था, 2. समर सिकंदर के दरबार में यूनानी वेश में सिकंदर को मारने आया था। 3. जब सेल्युकस ने तलवार निकालकर पुरु से कहा कि अदब से बात करो, तुम जूपिटर के बेटे और यूनान के सबसे बड़े बादशाह के सामने खड़े हो, और उसके सिपाहियों का खून गरम है।, तो सिकंदर को उसकी यह बात गलत लगी। इसीलिए अपनी इस बात के लिए सेल्यूकस को पुरु से क्षमा माँगनी पड़ी। 4. सिकंदर ने पुरु को धोखे से हराया। 5. सिकंदर ने अपने मृत सिपाहियों की तारीफ अधिक इसलिए की क्योंकि उन्हीं मृत सिपाहियों की वजह से वह युद्ध जीता था। तथा वह सोचता था कि उनकी रूहें मौत के परदे के पीछे से उसकी खुशी देखती हैं। 6. सिकंदर ने पुरु की तारीफ में यह कहा-हमारे बहादुर दुश्मन, हमारा दरबार आपका स्वागत करता है। हम आपका स्वागत करते हैं। हमारा स्वागत कबूल करें। हमने बादशाह बहुत देखे हैं और बहुत-से बादशाहों को हराया भी है, लेकिन जूपिटर की कसम! हमने आप जैसा बहादुर और दिलेर बादशाह आज तक नहीं देखा। हम आपकी बहादुरी से खुश हुए। अब आप फरमाइए, आपके साथ कैसा सुलूक किया जाए? **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. द, 2. स, 3. स, 4. ब, 5. ब, **(4) 1.** सिंहासन, 2. देवताओं, 3. बहादुरों, 4. सिपाहियों, 5. दरबार **(5)** 1. सिकंदर ने, सिपाहियों से, 2. पुरु ने, सिकंदर से, 3. सिकंदर ने, पुरु से, 4. पुरु ने, सिकंदर से, 5. पुरु ने **भाषा की बात : (क)** 1.वह मेरी सहायता नहीं करना चाहता।, अध्यापक ने छात्र को घर वापस जाने की आज्ञा दी।, यह मेरा सौभाग्य ही था कि मुझे भगवान के दर्शन हो गए।, आग की गरमाहट पाकर मेरी सर्दी भाग गई।, सिकंदर ने पुरुका अपमान नहीं किया था।, परीक्षा में पास होकर उसे बहुत खुशी हुई। **(ख)** शांति, प्रातः धिक्कार, बुराई, बहादुरी, **(ग)** 1 . बैठा है।, 2. छा जाता है।, 3. शुरू की जाती है। 4. चमकने लगता है। 5. चलती है। 6. बैठा रहता है। सोचने-समझने की बात ङ्क सिकंदर ने अपने सभी सिपाहियों की तारीफ इसलिए की होगी क्योंकि सिपाहियों की सहायता से ही उसने पुरु को जीता था। **कुछ करने की बात :** इस युद्ध में यदि सिकंदर हार जाता तो बंदी के रूप में पुरु उसके साथ वैसा ही व्यवहार करता जैसा एक वीर राजा दूसरे वीर राजा के साथ करता है। 2. स्वयं करें।

अध्याय-13 : धनराज पिल्लै

1.मौखिक : स्वयं करें। **2.लिखित :** (क) 1. धनराज पिल्लै का स्वभाव तुनकमिजाजी का, भावुक, दोस्तों व परिवार की कद्र करने वाला था। 2. धनराज पिल्ले ने राष्ट्रीय स्तर पर हॉकी खेलने की शुरुआत 1985 में मणिपुर में की। 3. धनराज पिल्लै को पहली स्टिक तब मिली जब उनके बड़े भाई को राष्ट्रीय कैंप के लिए चुना गया। उसने उन्हें अपनी पुरानी स्टिक दे दी। 4. धनराज पिल्लै ओलंपिक 1988 में इसलिए नहीं खेल सके क्योंकि उनका नाम 57 खिलाडियों की सूची में शामिल नहीं था। 5. धनराज पिल्ले की तुनकमिजाजी का संबंध उनके बचपन से जुड़ा हुआ है। वे बचपन से ही अपने-आपको बहुत असुरक्षित महसूस करते थे। तथा उन्हें जिंदगी में हर छोटी-बड़ी चीज पाने के लिए जूझना पड़ा, जिससे उनका स्वभाव चिड्चिड़ा हो गया। 6. धनराज पिल्लै ने अपनी सफलता का श्रेय अपनी माँ को दिया। उन्होंने सब भाई-बहनों में अच्छे संस्कार डालने की कोशिश की। उनकी माँ ने उन्हें प्रसिद्धि को विनम्रता से सँभालने की सीख दी है। 7. विदेशों में जाकर खेलने से जो कमाई हुई, उससे धनराज पिल्लै ने 1994 में पुणे के भाऊ पाटिल रोड पर दो बेडरूम का एक छोटा-सा फ्लैट खरीदा। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. द, 2. अ, 3. स, 4. स, 5. स, **(4)** 1. खेलों, 2. 57, 3. पढ़ने, 4. बचपन, 5. गुस्सा, 6. परिवार, **(5)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ 6. ✗।**भाषा की बात :** 1. बड़े, पुरानी, 2. दुबली, 3. बड़ी, 4. सबसे बड़ी, 5. लोकल, (ख)1. मेरा, 2. उसने, मुझे, अपनी, 3. उससे, 4. अपनी, कुछ, 5. मैं, अपने, 6. आपकी, यह, **सोचने-समझने की बात :** 'आर्थिक परेशानियाँ जीवन में रुकावट अवश्य डालती हैं पर वे मेहनती लोगों को आगे बढ़ने से रोक नहीं सकतीं। मैं इस बात से पूर्णत:रू सहमत हूँ। क्योंकि अगर हमारी लगन सच्ची हो तो किसी भी तरह की परेशानी या कमी हमारे रास्ते में बाधा नहीं डाल सकती। **कुछ करने की बात :** स्वयं करें।

अध्याय-14 : अंटार्कटिक महाद्वीप

1. मौखिक : स्वयं करें। **2. लिखित :** 1. पहली बार अंटर्कटिक को एक ब्रिटिश जलसेना अधिकारी, लेफ्टिनेंट एडवर्ड ब्रांस फील्ड ने जनवरी, 1820 ई. में देखा। 2. अंटार्कटिक को छोड़कर अन्य महाद्वीपों में प्रदूषण फैलने का मुख्य कारण मनुष्य की आवश्यकताएँ हैं। 3. ध्रुव प्रदेशों में लगभग छह महीने का दिन और छह महीने की रात होती है क्योंकि गरमी के दिनों में छह महीने तक सूर्य दिखाई देता रहता है और सर्दियों में छह महीने छिपा रहता है, 4. विभिन्न देशों द्वारा भेजे गए अनुसंधान दल अंटार्कटिक में अनेक प्रकार के उपयोगी अनुसंधान कार्य करते हैं, जैसे- मौसम विज्ञान संबंधी, रसायन ज्ञान, जीव विज्ञान आदि। विश्व के लोग अंटार्कटिक के वातावरण और यहाँ

के साधनों को सुरक्षित रखने के लिए भी प्रयत्नशील हैं। 5. 1884, ई0 में जेम्स क्लॉक रॉस अपने दो जलपोतों के साथ उस सागर तक पहुँचा जो पश्चिम को पूर्व से अलग करता है। आज यह रक्कस सागर के नाम से प्रसिद्ध है। रक्कस ने वहाँ दो ज्वालामुखी पर्वत खोजे जिनमें से एक आज भी सक्रिय है। रक्कस और उसके साथियों ने एक बहुत बड़ी हिम की दीवार देखी जिसकी ऊँचाई 45.46 मीटर थी। जहाँ तक दृष्टि जाती थी, वहाँ तक वही हिम-दीवार फैली हुई थी। आज इसे रक्कस का मैदान कहते हैं। 6. शिंप नाम का एक शाकाहारी प्राणी है जो पानी पर तैरती काई को खाकर जीवित रहता है। 7. ऐलबेट्रस बहुत बड़ा पक्षी है, जिसकी छाती सफेद होती है और इसके पंखों के कोने काले होते हैं। पंख खोलने पर इसकी लंबाई एक मीटर से भी अधिक होती है। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. स, 2. द, 3. ब, 4. स, 5. ब, 6. ब, **(4)** 1. पचानवे, 2. विनसन मैस्सिफ, 3. ऊपर 4. 1820, 5. इकतीस, 6. एम्परर, **(5)** 1. ✗2. ✓ 3. ✗4. ✗ 5. ✗ 6. ✓। **भाषा की बात : (क)** अव - शेष, प्रति - शत, सम - शीतोष्ण, सम् - रक्षण, अन - जानी, अनु - संधान, **(ख)** 1. ऊपर की ओर, 2. पहले ही, 3. दूर से, 4. आगे, 5. अतिशय, तिरछा, **(ग) धरती :** भूमि, धारा, पृथ्वी, **रास्ता :** पथ, मार्ग, राह, **समुद्र :** सागर, जलधि, रत्नाकर, वायु रू पवन, समीर, हवा, भारत : हिंदुस्तान, भरतखंड, आर्यावर्त, **सोचने-समझने की बात :** यदि हमें अंयरर्कटिक जाना पड़े तो हम अपने साथ गरम कपडे, ऑक्सीजन के सिलेंडर, खाने-पीने का सामान, रहने के लिए टेंट, आदि सामान ले जाना चाहेंगे। **कुछ करने की बात :** यदि अंटार्कटिक महाद्वीप पर जनसंख्या में वृद्धि के कारण वायुमंडल प्रदूषित हो जाता है, तो वहाँ का तापमान बढ़ने लगेगा तथा तापमान बढ़ने के कारण वहाँ की बर्फ पिघलने लगेगी और यदि यह सारी बर्फ पिघल जाए तो सभी समुद्रों का जल स्तर बढ़ जाएगा जिसके कारण अनेक देश व नगर पानी में डूब जाएँगे।

अधयाय-15 : क्या निराश हुआ जाए

1. मौखिक : स्वयं करें। **2. लिखित :** 1. आजकल लोगों में दोष अधिक और गुण कम दिख रहे हैं क्योंकि चारों ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है माना जाता है कि जो लोग धोखा,फरेब करते हैं इस समय वे ही सुखी हैं तथा जिसमें जितने दोष हैं वह उतने ही बड़े पद पर हैं। गुणवान ईमानदार व्यक्ति को तो अब मूर्खता का पर्याय माना जाता है। 2. इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह व भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में आजकल जीवन के महान मूल्यों के प्रति लोगों की आस्थाएँ हिलने लगी हैं। 3. धर्म को धोखा इसलिए नहीं दिया जा सकता है क्योंकि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा

हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आधयात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। 4. व्यक्तिचित्त सब जगह आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता, क्योंकि भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। 5. आजकल झूठ और फरेब का रोजगार करने वाले फलते-फूलते दिख रहे हें क्योंकि वे लोग झूठ व फरेब के सहारे अपने सारे कार्य पूर्ण कर लेते हैं। तथा ईमानदार व्यक्ति सही ढंग से कार्य पूर्ण करना चाहते हैं। जिसे पूर्ण करने में समय लगता है तथा कभी-कभी पूर्ण भी नहीं हो पाता। 6. नहीं, वर्तमान में मनुष्यता एकदम खत्म नहीं हुई है और न ही कभी खत्म होगी। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. द, 2. ब, 3. द, 4. स, 5. अ, **(4)** 1. संदेह, 2. रोजगार, 3. सच्चाई, 4. गुमराह, 5. व्यक्तिचित्त, 6. पदार्फाश, **(5) 1.** ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓। **भाषा की बात : (क)** लोकोक्ति, महोत्सव, परोपकार, वार्षिकोत्सव, चंद्रोदय, **(ख)** लोभ और मोह - इंद्र समास, काम और क्रोध - द्वंद्व समास, कायदे और कानून - इंद्र समास, मिलन की भूमि - तत्पुरुष समास, मनुष्य की बुद्धि - तत्पुरुष समास, **(ग) देश :** राष्ट्र, **आदमी :** मनुष्य, मानव, इंसान, **भारत :** हिंदुस्तान, भरतखंड, आर्यावर्त, **पानी :** नीर, वारि, जल, **दूध :** दुग्ध, पय, क्षीर, **प्रार्थना :** वंदना, स्तुति, पूजा, **सोचने-समझने की बात :** 1. किसी आकस्मिक दुर्घटना के हो जाने पर कुछ लोग असंयत हो जाते हैं पर इसके विपरीत कुछ लोग बड़े धैर्य के साथ समस्या के समाधाान में जुट जाते हैं। ऐसे में मैं धैर्य के साथ समस्या का समाधान करने वाले लोगों का पक्ष ग्रहण करूँगा। **2.** स्वयं करें।

कुछ करने की बात : स्वयं करें।

अध्याय-16 : बहुत दिनों के बाद

1.मौखिक : स्वयं करें। **2.लिखित :** . इस कविता का मूल भाव ग्रामीण परिवेश की जानकारी देना है 2. कवि अपने गाँव के रास्ते की चंदन जैसे रंग वाली धूल छूने की बात कर रहा है।, 3. कोकिल कंठी तान गाँव में धान कूटती किशोरियों के गले से निकलती है। 4. गँवई 'गाँव की ' को कहा जाता है। 5. अबकी बार कवि ने जी भर गंधा-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ भोगे। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. स, 2. स, 3. ब, 4. द, **भाषा की बात : (क)** फसलें, दिनों, किशोरियाँ, गन्ने, धानों, पगडंडियाँ, रसों, (ख) गगन, काँटा, रात, दुख, युवती, बासी, **(ग) दिन :** दिवस,

वार, **कोकिल :** कोयल, पिक, **फूल :** पुष्प, सुमन, **भू :** धरती, पृथ्वी, **सोचने-समझने की बात :** लंबे समय के बाद अपने परिचित ग्राम्य अंचल में जाने पर कवि को वहाँ की मिट्टी में अपनेपन की गंध का अनुभव हुआ होगा। उन्हें वहाँ के खेत खलिहान अपने से प्रतीत हुए होंगे। वहाँ की मिटी की धूल को अपने माथे पर लगाने का मन हुआ। **कुछ करने की बात :** स्वयं करें।

अध्याय-17 : नीलकंठ

1. मौखिक : स्वयं करें। **2. लिखित :** 1. नीलाभ ग्रीवा के कारण मोर का नाम रखा गया नीलकंठ और उसकी छाया के समान रहने के कारण मोरनी का नामकरण हुआ राधा। 2. घर में अन्य पशु-पक्षियों ने मोर के बच्चों का स्वागत उसी प्रकार किया जैसे नववधू के आगमन पर परिवार में स्वाभाविक है। लक्का कबूतर नाचना छोड़कर दौड़ पड़ा और उनके चारों ओर घूम-घूमकर गुटरगूँ-गुटरगूँ की रागिनी अलापने लगे। बड़े खरगोश सभ्य सभासदों के समान क्रम से बैठकर गंभीर भाव से उनका निरीक्षण करने लगे। ऊन की गेंद जैसे छोटे खरगोश उनके चारों ओर उछल-कूद मचाने लगे। तोते मानो भलीभाँति देखने के लिए एक आँख बंद करके उनका परीक्षण करने लगे। 3. मोर ने साँप को फन के पास पंजों से दबाया और फिर चोंच से इतने प्रहार किए कि वह अधमरा हो गया। पकड़ ढीली पड़ते ही खरगोश का बच्चा साँप के मुख से निकल आया, और बच गया। 4. फलों के वृक्षों से अधिक उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे। वसंत में जब आम के वृक्ष सुनहली मंजरियों से लद जाते थे, अशोक नए लाल पल्लवों से ढक जाता था, तब जालीघर में मोर का रहना असहय हो जाता था। 5. नाम के अनुरूप वह स्वभाव से भी कुब्जा थी। कुब्जा अन्य जीवों को नीलकंठ के साथ देखते ही मारने दोड़ती। चोंच से मार-मारकर उसने राधाा की कलगी नोच डाली, पंख नोच डाले। नीलकंठ उससे दूर भागता था और वह उसके साथ रहना चाहती थी। न किसी जीव-जंतु से उसकी मित्रता थी, न वह किसी को नीलकंठ के समीप आने देना चाहती थी। राधा मोरनी ने दो अंडे दिए, जिनको वह पंखों में छिपाए बैठी रहती थी। पता चलते ही कुब्जा ने चोंच मार-मारकर राधा को ढकेल दिया और फिर अंडे फोड़कर दूँठ जैसे पैरों से चारों ओर छितरा दिए। एक दिन उसने कजली पर भी चोंच से प्रहार किया। 6. नीलकंठ मोर ने अपने आपको चिड़ियाघर के निवासी जीव-जंतुओं का सेनापति और संरक्षक नियुक्त कर दिया। सवेरे ही वह सब खरगोश, कबूतर आदि की सेना एकत्र कर उस ओर ले जाता जहाँ दाना दिया जाता और घूम-घूमकर मानो सबकी रखवाली करता रहता। किसी ने कुछ गड़बड़ की और वह अपने तीखे चंचु-प्रहार से उसे दंड देता। दंडविधान के समान ही उन जीव-जंतुओं के प्रति उसका प्रेम भी असाधारण था। प्रायः वह मिटी में पंख फैलाकर बैठ जाता और वे सब उसकी लंबी पूँछ और सघन पंखों में छुआ-छुऔअल-सा खेलते रहते थे। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. अ, 2. स, 3. द, 4.

अ, 5. स, 6. ब, **(4)** 1. कमबख्त, 2. पिंजड़ा, 3. चिडियाघर, 4. नीलाभ, 5. कलगी, चमकीली, 6. कलाप्रिय, 7. जाली, **(5)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓। **भाषा की बात : (क)** 1. अन. अधिकार, 2. मंडल. आकार, 3. नील. आभ, 4. नव. आगंतुक, 5. विस्मय. अभिभूत, 6. मेघ. आच्छनन, **(ख)** 1. आलेखन, 2. चिडियाँ, 3. गोलियाँ, 4. चेष्टा, 5. अपरिचित, 6. मार्जारी, **सोचने-समझने की बात :** 1. लेखिका ने मृत मयूर को गंगा में प्रवाहित किया। यह लेखिका के जीव-जंतुओं के प्रति स्नेह, उदारता, दुख व शोक को प्रदर्शित करता है। 2. स्वयं करें। **कुछ करने की बात :** स्वयं करें।

अधयाय-18 : मैं मजदूर हूँ

1.मौखिक : स्वयं करें। **2.लिखित :** 1. मजदूर के कंधों पर धरती का (भूमंडल का) भार है। 2. यदि मजदूर मेहनत करना छोड दे तो दुनिया लड़ खड़ाकर गिर पड़े तथा जमाने का दौड़ना बंद हो जाएगा। 3. मजदूर हमेशा कठोर परिश्रम, ईमानदारी, व लगन के साथ कार्य करते हैं। वह कार्य करते हुए कभी भी नहीं थकते तथा किसी भी कार्य से पीछे नहीं हटते। 4. मजदूर पर्वतों को काटकर उसमें रास्ते बनाते हैं। चट्टानें खोदकर ताँबा, लोहा, सोना, चाँदी निकालते हैं तथा वनों को काटकर वहाँ की जमीन पर खेती करते हैं। वहाँ बड़े-बड़े कारखाने बनाते हैं। 5. मजदूर को यह पीड़ा है कि वह अपनी मेहनत से फसल उगाता है पर उस फसल का एक भी दाना उसके लिए नहीं होता व बड़े-बड़े घर बनाता है पर उन घरों में से कोई भी घर उसका अपना नहीं होता। वह सोचता है कि दुनिया में कौन सी चीज ऐसी है जो उसने अपने हाथ से नहीं पैदा की परंतु यह सब कुछ उसके लिए नहीं है। 6. मजदूरों के प्रति मानवों का व्यवहार उदारतापूर्ण, स्नेहपूर्ण, सम्मानजनक, शिष्टाचारपूर्ण होना चाहिए। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. द, 2. अ, 3. स, 4. अ, 5. द, **(4)** 1. गजब हो जाए, दुनिया लडखड़ा कर, 2. की परिधि की व्यापकता, 3. खानों से अमरीका की नई, 4. के छोरों तक फैला, 5. मैंने अपने हाथों, 6. चूमती लहरों पर तूफानों से, **भाषा की बात : (क)** बैलगाडियाँ, लड़ाइयाँ, फसलें, चट्टानें, वनों, छोरों, परिधियाँ, गहराइयाँ, **(ख)** आकाश, पुष्प, नवीन, निर्दयता, गण्य **सोचने-समझने की बात :** स्वयं करें। **कुछ करने की बात :** स्वयं करें।

अध्याय-19 : सचिन तेंदुलकर

1.मौखिक : स्वयं करें। **लिखित : 1.** सचिन तेंदुलकर का जन्म 24 अप्रैल, 973 को मुंबई में हुआ। **2.** शेन वार्न ऑस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध लेग स्पिनर थे। उन्होंने सचिन के विषय में बताया था, 'मुझे तो सपने में भी सचिन नजर आते हैं।' **3.** सचिन अपनी मेहनत, लगन, एकाग्रता, खेल के प्रति समर्पण, असाधारण खेल तथा विनम्रता के कारण विश्व के गणमान्य खिलाडियों में शामिल हुए। **4.** सचिन को निम्नलिखित सम्मानों से सम्मानित किया गया है। 997 में सचिन को विश्व प्रसिद्ध पत्रिका '

विसडन' के नाम पर 'क्रिकेटर ऑफ द् इयर ' का पुरस्कार मिला। आई.सी.सी. द्वारा वर्ष 2010 के लिए सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी 'प्लेयर ऑफ द इयर' और पीपल्स च्वाइस अवार्ड की ट्रॉफी प्रदान किए जाने से पूर्व सचिन अर्जुन अवार्ड (1994), राजीव गाँधी खेल रत्न (1997-98), पद्मश्री (1999), महाराष्ट्र भूषण (200) , पद्मविभूषण (2008), पक्कली उमरीगर सम्मान (20) आदि से भी सम्मानित किए जा चुके हैं। **5.** सचिन को क्रिकेट का भगवान इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने मैचों में संकट के समय रन बनाकर या विकेट लेकर भारतीय टीम को कई जीत दिलाई। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. द, 2. ब, 3. अ, 4. द, 5. स, **(4)** 1. 177, 2. 51, 3. 49, 4. 15 4, 5. 5, **(5)** 1. ✗ 2, ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✓।**भाषा की बात : (क)** कठोर, क्षीण, उत्साहित, अप्रसिद्ध, स्वल्प, **(ख) सेवक :** अनुचर, नौकर, दास, **पिता :** तात, जनक, **देश :** राष्ट्र, राज्य, प्रांत, **भगवान :** प्रभु, ईश्वर, परमेश्वर, **पुत्र :** आत्मज, बेटा, **(ग)** 1. खेलते थे, 2. कहे जाते हैं।, 3. जवाब देंगे। 4. नजर आते हैं। 5. बनाया। **सोचने समझने की बात :** 1. सचिन तेंदुलकर अगर गेंदबाजी पर विशेष ध्यान देते तो शायद वे विश्व के बेहतरीन गेंदबाज होते। 2. सचिन के महान व्यक्तित्व में हम ये गुण देखते हैं-एकाग्रता, निरंतर अभ्यास, खेल की समझदारी, खेल-कौशल में सुधार, आत्मविश्वास, धार्मिक प्रवृत्ति, उदार व्यक्तित्व आदि। **कुछ करने की बात :** सचिन तेंदुलकर के जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें निरंतर एकाग्रता से अभ्यास करते रहना चाहिए। हमारे अंदर आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा होना चाहिए। हमें निरंतर प्रयास करना चाहिए किसी फल की आशा नहीं करनी चाहिए। हमें दूसरों व देश के लिए कार्य करने चाहिए।

अध्याय-20 : सोना

1. मौखिक : स्वयं करें। **2. लिखित : 1.** कई वर्ष पूर्व लेखिका का एक पालतू हिरन मर गया था जिसका उन्हें बहुत दुख हुआ और उन्होंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी, परंतु एक दिन एक शिशु हिरन के प्राणों की रक्षा करने के लिए लेखिका ने अपना नियम भंग किया। **2.** फ्लोरा अपने संगियों को भूलकर अपनी नवीन सृष्टि के संरक्षण में व्यस्त हो गई थी। **3.** मनुष्य की ध्वंसलीला के परिणामस्वरूप अनेक सुंदर व अद्भुत पशु-पक्षी मारे जाते हैं और कुछ पशु-पक्षी विलुप्त हो जाते हैं। **4.** दूध पीकर और भीगे चने खाकर सोना कुछ देर तक कम्पाउंड में चारों पैरों को संतुलित कर चौकड़ी भरती, फिर वह छात्रवास पहुँचती और प्रत्येक कमरे का भीतर-बाहर से निरीक्षण करती। छात्रावास का जागरण और जलपान अध्याय समाप्त होने पर वह घास के मैदान में कभी दूब चरती और कभी उस पर लोटती रहती। लेखिका के भोजन के समय वह भीतर आ जाती और तब तक उनसे सटी हुई खड़ी रहती जब तक उनका खाना समाप्त न हो जाता। घंटी बजते ही वह फिर से प्रार्थना के

मैदान में पहुँच जाती और उसके समाप्त होने पर छात्रावास के समान ही कक्षाओं के भीतर-बाहर चक्कर लगाना आरंभ कर देती। वह पंक्तिबद्ध छोटे बच्चों के ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती। अँधेरा होते ही वह लेखिका के पलंग के पास आ बैठती और फिर सवेरा होने पर ही बाहर निकलती। उसका दिनभर का कार्यकलाप भी एक प्रकार से निश्चित था। **5.** सोना लेखिका के प्रति कई प्रकार से अपना स्नेह प्रदर्शित करती थी। बाहर खड़े होने पर वह सामने या पीछे छलाँग लगाती और उनके सिर के ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती। भीतर आने पर वह लेखिका के पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती। लेखिका के बैठे रहने पर वह साड़ी का छोर मुँह में भर लेती और कभी चुपचाप पीछे खड़े होकर चोटी ही चबा डालती। **6.** छात्रवास के सन्नाटे और फ्लोरा तथा लेखिका के अभाव के कारण सोना इतनी अस्थिर हो गई थी इधार-उधार कुछ खोजती-सी वह प्राय: कंपाउंड से बाहर निकल जती थी। इतनी बड़ी हिरनी को पालने वाले तो कम थे, परंतु खाद्य और स्वाद प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था। इसी आशंका से माली ने उसे मैदान में एक लंबी रस्सी से बाँधाना आरंभ कर दिया था। एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बंधान-सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धारती पर आ गिरी। इससे सोना की मृत्यु हो गई। **बहुविकल्पीय प्रश्न (3)** 1. ब, 2. ब, 3. ब, 4. द, **(4)** 1. पड़ोसियों, 2. सुस्मिता वसु, 3. पलंग, 4. स्नेह- प्रदर्शन, 5. पैरों, 6. मनुष्य, **(5)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓ । **भाषा की बात :** 1 **(क)** प्रति. आवर्तन, ग्रीष्म. अवकाश, विद्या. अर्थी, छात्र. आवास, शैशव. अवस्था, आनंद. उत्सव, **(ख)** वृद्धावस्था, अप्रिय, असंतुष्ट, अपरिचित, विगत, विस्मृति, दयालु, वांछित, अंसतुलित, द्वेष (घृणा)। **सोचने-समझने की बात :** सुस्मिता किसी अन्य व्यक्ति को हिरन इसलिए नहीं देना चाहती थी क्योंकि उसे किसी अन्य व्यक्ति पर विश्वास नहीं था कि वह उस हिरन की देख-रेख अच्छी तरह से करेगा। 2. सोना को छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे, क्योंकि उनके साथ खेलने का उसे अधिक अवसर मिलता था। वे पंक्तिबद्ध खड़े होकर सोना-सोना पुकारते और वह उनके ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती। **कुछ करने की बात :** यदि पशुओं में भी मनुष्यों की तरह सोचने-समझने की शक्ति होती तो वे अपने भाव हमें बता पाते तथा अपने दुख दर्द हमसे बाँट पाते। शायद फिर पशुओं का व्यवहार मनुष्यों के प्रति स्नेह का होता तथा मनुष्य व पशु सभी एक साथ रह पाते।

YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.
EDUCATIONAL PUBLISHER

Regd. Off. : F-214, Laxmi Nagar, Delhi-110 092
Tel. : 91-11-4758 6784, 91-97116 18765
E-mail : yellowbirdpublications@gmail.com • info@yellowbirdpublications.com
Website : www.yellowbirdpublications.com